दादा भगवान परिवार का

दिसंबर २०२२

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

Solve Your Problems

संपादकीय

मित्रों,

मान लो कि आप स्कूल से लौट रहे हो। आसमान में कोहरा छाया हुआ है और आपको घर जाने का रास्ता नहीं मिल रहा है। उस समय यदि सूरजदादा हाजिर हो जाएँ तो कोहरा गायब हो जाएगा और रास्ता भी मिल जाएगा। उसी तरह लाइफ में भी ऐसे प्रॉब्लम्स आ जाते हैं जिनसे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिलता है। यदि उस समय सूझ की लाइट हाजिर हो जाए तो उलझनों का कोहरा गायब हो जाएगा और प्रॉब्लम से निकलने का रास्ता भी मिल जाएगा।

तो, यह सूझ है क्या? किस तरह साकरचंद ने सूझ के सहारे सत्रह ऊँटों का बँटवारा किया? और इसी सूझ का वीरांश ने किस तरह उपयोग किया? ज्ञानियों की सूझ कैसी होती है? क्या सूझ ने हमारे प्यारे-प्यारे आलु और चिली की हेल्प की? चलो, जानते हैं इस अंक में...

- डिम्पलभाई मेहता

वर्ष : १० अंक: ९
अखंड क्रमांक: ११७
दिसंबर - २०२२

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : सूझ यानी क्या?

पूज्यश्री : समझ पड़ना वह सूझ कहलाती है। कोई प्रॉब्लम आती है तो लगता है, 'क्या करूँ? किस तरह सॉल्व करूँ?' तो भीतर सूझ पड़ती है, 'ऐसा करने से प्रॉब्लम सॉल्व हो जाएगी।'

प्रश्नकर्ता : सूझ किस प्रकार बढ़ती है?

पूज्यश्री : सही समझ से सूझ बढ़ती है। दूसरों का अच्छा काम देखकर खुश होने से कि 'कितनी अच्छी सूझ है', उनके काम की तारीफ करने से कि 'कितना अच्छा काम किया है', सामने वाले का पॉज़िटिव देखने से सूझ बढ़ती जाती है।

प्रश्नकर्ता : सूझ कम होने के क्या कारण हैं?

पूज्यश्री : दूसरों के दोष देखने से सूझ कम होती जाती है। कोई अच्छा काम कर रहा हो और हम उसका एप्रीशिएशन करने के बदले उसके नेगेटिव देखें तो हमारी सूझ कम होती जाती है।

आज से तय करो कि अब से पॉज़िटिव देखना है। तो सूझ बढ़ेगी। पॉज़िटिव और निर्दोष देखना, तो सभी शक्तियाँ बढ़ जाएँगी।

चलो खेलें....

रास्ता खोजकर मधुमक्खी को छत्ते तक पहुँचाओ।

पिछले अंक में दिए गए चित्र में सबसे सुंदर रंगभरने वाले वेद भानुशाली को अभिनंदन...

Ved Bhanushali
Bharuch
7 yrs

AALOO CHILLY

ईर्ष्या करने से सूझ समाप्त हो जाती है।

यह तो

सूझ सबसे बड़ी शक्ति है। वह सभी समस्याओं (प्रॉब्लम्स) में से बाहर निकालती है। जहाँ भी फँसे हों वहाँ से बाहर निकाले वह सूझ!

किसी टंकी में एक ही छेद हो तो उसमें पानी टिकेगा क्या? या बीस छेद करने पड़ते हैं? वैसे ही एक भी दोष देखा मतलब एक छेद किया। तुरंत ही सूझ समाप्त हो जाएगी।

नई बात है!

सूझ वाले व्यक्ति के परिचय में रहने से आपकी सूझ खिलती जाती है।

क्रेयॉन्स

१९९० का वह वेकेशन दोनों भाइयों के लिए यादगार बन गया।

ऋग्वेद तथा वीरांश अपने बैग्स पैक करके गाड़ी का इंतजार कर रहे थे। ऋग्वेद को वीरांश के बैग में बहुत सारे क्रेयॉन्स दिखे। "क्रेयॉन्स के अलावा भी बैग में कुछ भरा है या नहीं?!!" ऋग्वेद ने वीरांश से पूछा। छोटे भाई का मजाक उड़ाने का कोई भी चान्स वह नहीं छोड़ता था। वीरांश हमेशा की तरह चुप रहा।

तभी 'बीप बीप' कार का हार्न सुनाई दिया। यश अपने पापा के साथ ऋग्वेद और वीरांश को लेने आया था। बातों ही बातों में रास्ता कैसे कट गया पता ही नहीं चला।

कैम्प में एक खुशमिज़ाज सज्जन ने सभी बच्चों का स्वागत किया।

"हलो फ्रेन्ड्स। वेलकम टू द कैम्प। मेरा नाम अनिल है और ये मल्लिका मैडम हैं", अनिलभाई ने परिचय दिया। मल्लिका मैडम ने सभी बच्चों को एक प्यारी सी स्माइल दी।

"तीन दिवसीय इस कैम्प में हम खूब धमाल-मस्ती करेंगे। और हाँ, एक बात खास तौर से कहनी है। वैसे तो हम सब यहाँ सुरक्षित हैं। लेकिन यदि कोई प्रॉब्लम आए तो ध्यान रखना कि सॉल्यूशन हमेशा आस-पास ही होता है।" यह सुनकर वीरांश कुछ सोच में पड़ गया। ऋग्वेद ने यश की तरफ देखकर कहा, "हाउ बोरिंग... ये लोग मस्ती कब कराएँगे?" ऋग्वेद ने उबासी ली और यश जोर से हँस पड़ा।

"अरे वाह! तुम्हें भी कलरिंग पसंद है? मुझे भी!" वीरांश के बैग में क्रेयॉन्स देखकर उसके पास बैठी घुँघराले बालों वाली लड़की ने पूछा।

"हाँ..."

"नाइस! आज शाम को क्रेयॉन आर्ट है..." और फिर तुरंत ही अपना परिचय दिया, "मेरा नाम जाह्नवी है और तुम्हारा...?"

"वीरांश..." वीरांश को लगा जैसे उसे अपने जैसा कोई मिल गया।

तभी अनिल सर ने तीन बार ताली बजाई और कहा, "चलो, एक आइस-ब्रेकर गेम खेलते हैं... आप सभी को टग ऑफ वॉर के बारे में तो पता ही होगा!" अनिल सर ने सबको दो टीमों में बाँट दिया।

वीरांश, जाह्नवी, ऋग्वेद और यश एक टीम में थे। जाह्नवी ने सबको पास बुलाकर धीरे से कहा, "जब बल से काम ना हो सके तो अकल से काम लेना चाहिए। विरोधी टीम हमसे ज्यादा स्ट्रोंग है। इसलिए पहले तो सिर्फ इतनी ही ताकत लगाएँगे की हम खिंचे न जाए। फिर जब वे थक जाएँ तब हम खींचने के लिए जोर लगाएँगे। क्या लगता है तुम सबको?" सभी को उसकी बात पसंद आई और सबने उसके कहे अनुसार किया। और वे जीत गए!

"वाह... तुम्हें यह सब कैसे सूझा?" वीरांश ने जाह्नवी से पूछा।

"ओह, मैंने कहीं देखा होगा। तुम्हें पता है...समझ हर जगह होती है। सिर्फ उसे कैच करना पड़ता है!" यह कहकर जाह्नवी ने अपना चश्मा ठीक किया।

"सही बात है..." वीरांश ने कहा।

"इसमें क्या बड़ी बात है...यदि हमने भी थोड़ा सोचा होता तो हमें भी सूझ पड़ जाती..." ऋग्वेद ने यश की तरफ देखकर कहा... "हाँ, हाँ, सूझ पड़ ही जाती..." यश ने कहा।

दोपहर को सब बगीचे में आर्ट एक्टिविटी के लिए मिले। मल्लिका मैम के चेहरे पर थकान थी। उन्होंने अपने पर्स से एक छोटी बॉटल निकाली और अपने मुँह में दो बार स्प्रे किया।

वीरांश को थोड़ी जिज्ञासा हुई। उसने जाह्नवी से पूछा, "वह क्या है?"

"ओह वह... वह अस्थमा पम्प है। अस्थमा, सांस की एक बीमारी है..."

मैम ने सबकी ओर देखा और कहा, "हम क्रेयॉन आर्ट करेंगे। व्हाइट शीट को बीच से फोल्ड करके उस पर अपनी मनपसंद डिज़ाइन बनाओ। फिर क्रेयॉन्स को शार्पनर से छीलकर उस पर फैलाओ। क्रेयॉन्स छील लो तो मेरे पास लेकर आना। मैं पेपर फोल्ड करके उस पर इस्त्री फेर दूँगी। इस्त्री की गरमी से क्रेयॉन्स पिघल जाएँगे और तुम्हारी शीट पर एक सुंदर डिज़ाइन तैयार हो जाएगी।"

"क्या क्रेयॉन्स पिघल जाते हैं?" जाह्नवी को आश्चर्य हुआ।

"हाँ... क्रेयॉन्स मोम के बने होते हैं। इसलिए पिघल जाते हैं!" वीरांश को जवाब सूझा।

वीरांश और जाह्नवी को क्रेयॉन आर्ट में बहुत मज़ा आया। लेकिन यश और ऋग्वेद दोनों बहुत बोर हो गए।

रात हो गई सभी बच्चे सोने की तैयारी कर रहे थे। तभी वीरांश की नज़र मल्लिका मैम पर पड़ी। वे कुछ ढूँढ़ रही थीं। और अचानक पावर कट हो गया।

"अनिलभाई, मुझे मेरा पम्प नहीं मिल रहा है। क्या आपके पास टॉर्च है?" मल्लिका मैम थोड़ी हाँफ रही थीं। अस्थमा

की बीमारी के कारण पम्प के बिना मल्लिका मैम को सांस लेने में तकलीफ हो रही थी।

अनिलभाई ने अँधेरे में ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की। लेकिन न तो उन्हें टॉर्च मिली न ही कैन्डल। उनके पास एक छोटा-सा लाइटर था, लेकिन उसकी लाइट बार-बार बूझ जाती थी और वह पम्प खोजने के लिए पर्याप्त भी नहीं थी। मल्लिका मैम की हालत बिगड़ रही थी।

उसी समय वीरांश को कुछ सूझा। उसकी जेब में कुछ क्रेयॉन्स थे। "क्रेयॉन्स मोम के बने होते हैं, तो वेक्स कैन्डल की तरह उन्हें भी जलाया जा सकता है!"

अनिल सर से लाइटर लेकर उसने क्रेयॉन्स जलाए। क्रेयॉन्स कैन्डल की तरह जल उठे और उसकी लाइट की मदद से मल्लिका मैम का पम्प मिल गया। मल्लिका मैम की जान में जान आई और तभी लाइट भी आ गई।

"क्रेयॉन्स का कैन्डल की तरह उपयोग...ब्रिलियन्ट", मल्लिका मैम ने वीरांश को शाबाशी दी और दिल से उसका आभार मानते हुए कहा, "वीरांश, तुमने मेरी जान बचाई। थैंक यू सो मच..."

"वीरांश... सचमुच बहुत स्मार्ट आइडिया था!" जाह्नवी ने वीरांश से कहा।

"शायद तुम्हारी स्मार्टनेस को एप्रिशिएट करते-करते थोड़ी-बहुत मुझमें भी आ गई..." वीरांश ने लाइटली बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, "याद है? अनिल सर ने कहा था, सॉल्यूशन आस-पास ही होता है..."

"अरे! सर की बात तो हमने भी सुनी थी।" ऋग्वेद और यश भी वहाँ आ गए, "लेकिन हमें तो नहीं सूझा। यू आर रियली स्मार्ट माय लिटल ब्रदर!" ऋग्वेद ने पहली बार दिल से वीरांश की तारीफ की।

उस दिन वीरांश कैम्प का हीरो बन गया।

अठारहवाँ ऊँट

पिताजी की सारी संपत्ति का बँटवारा हो गया। लेकिन पिताजी के सबसे प्रिय ऊँटों का बँटवारा कैसे करेंगे?

चिंता मत करो। एक डायरी में पिताजी ने साफ लिखा है कि ऊँटों का बँटवारा कैसे करना है।

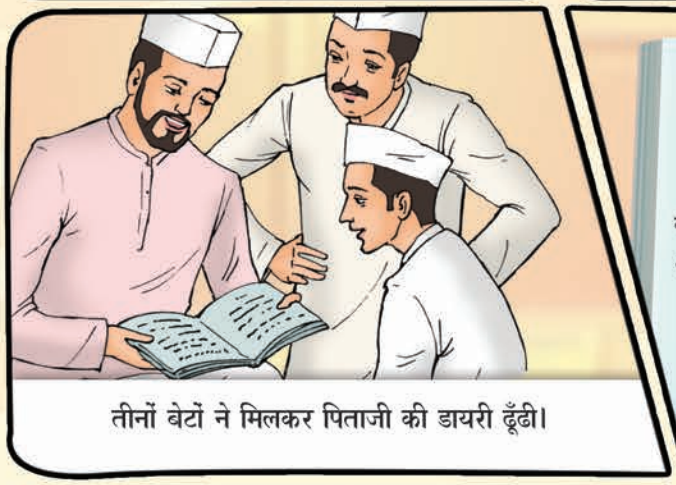
तीनों बेटों ने मिलकर पिताजी की डायरी ढूँढी।

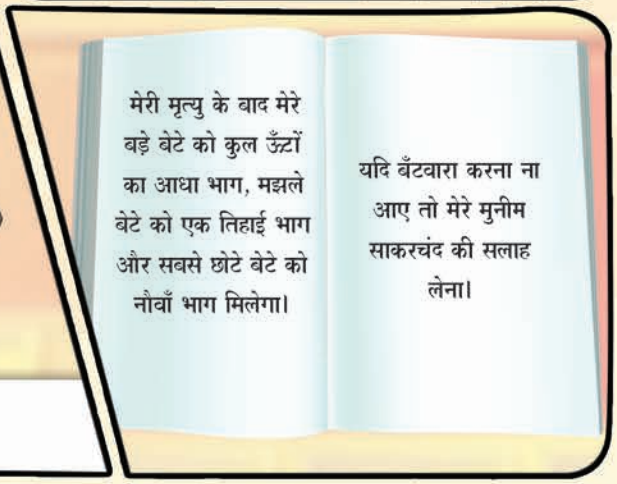
मेरी मृत्यु के बाद मेरे बड़े बेटे को कुल ऊँटों का आधा भाग, मझले बेटे को एक तिहाई भाग और सबसे छोटे बेटे को नौवाँ भाग मिलेगा।
यदि बँटवारा करना ना आए तो मेरे मुनीम साकरचंद की सलाह लेना।

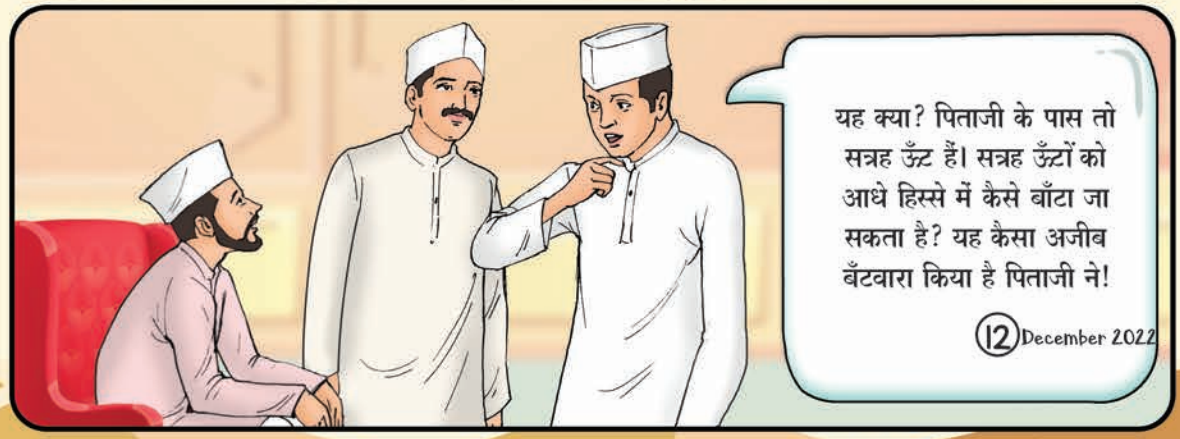
यह क्या? पिताजी के पास तो सत्रह ऊँट हैं। सत्रह ऊँटों को आधे हिस्से में कैसे बाँटा जा सकता है? यह कैसा अजीब बँटवारा किया है पिताजी ने!

तुम्हें सबसे कम ऊँट मिले हैं इसलिए तुम ऐसी बात कर रहे हो।

तो क्या तुम्हें बँटवारा करना आएगा?

लेकिन साकरचंद तो बिल्कुल मूर्ख है। वह क्या इसका हल निकाल पाएगा?

लेकिन, जब तीनों इसका हल नहीं ढूँढ पाए तो उन्हें साकरचंद के पास जाना ही पड़ा।

साकरचंद ने ध्यान से तीनों की बातें सुनी।

तुम्हारे सत्रह ऊँटों के साथ मेरा एक ऊँट जोड़ देता हूँ। अब कुल (१८) अठारह ऊँट हो गए।

अठारह का आधा भाग, नौ (९)। नमन, यह तुम्हारे नौ ऊँट।

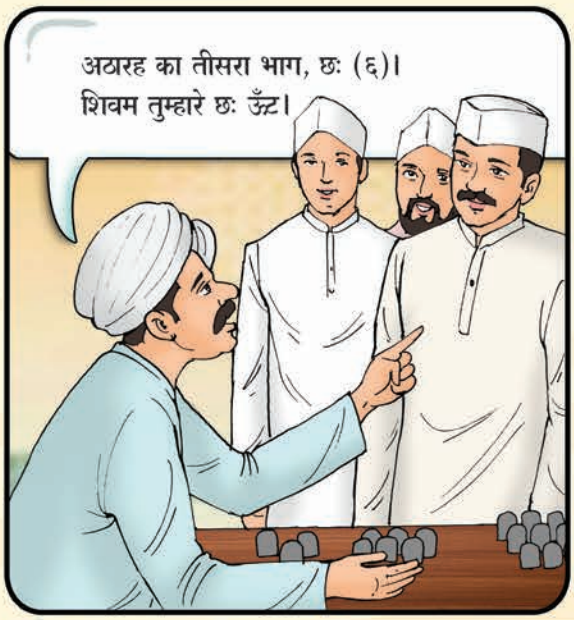
अठारह का तीसरा भाग, छः (६)।
शिवम तुम्हारे छः ऊँट।

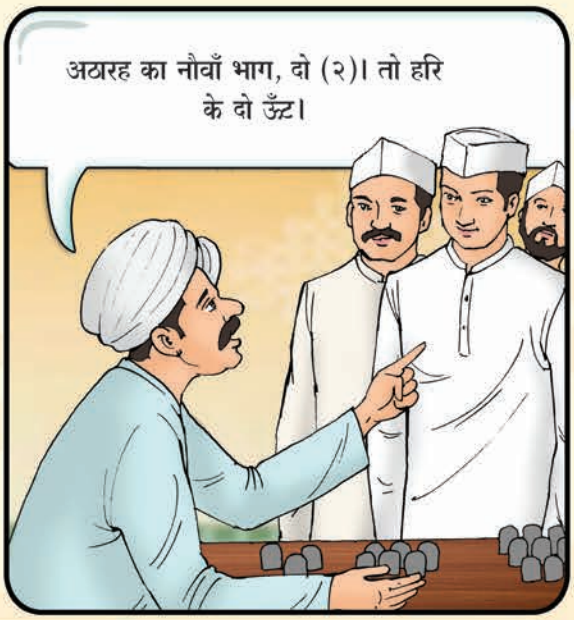
अठारह का नौवाँ भाग, दो (२)। तो हरि के दो ऊँट।

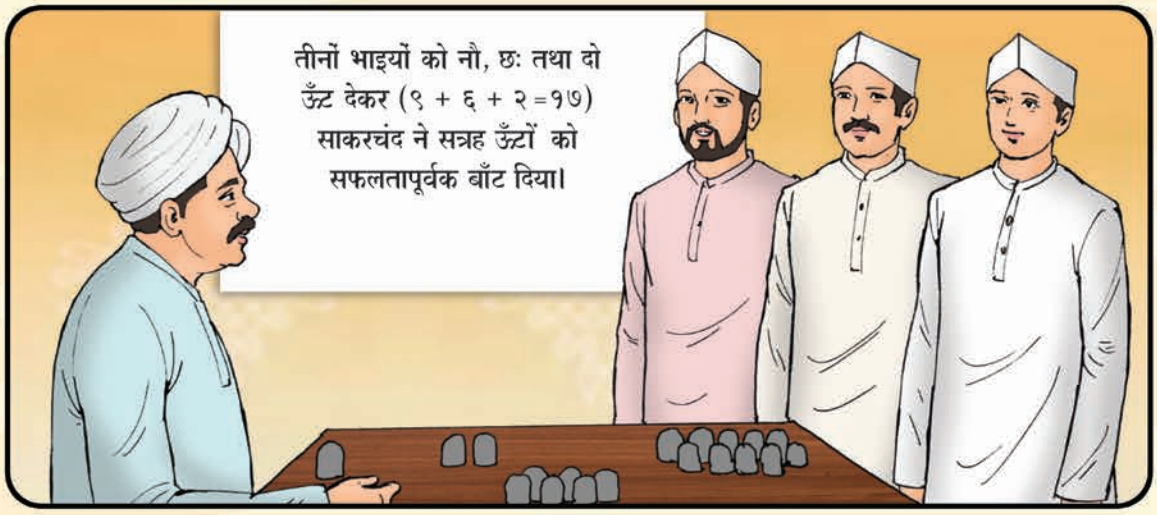
तीनों भाइयों को नौ, छः तथा दो ऊँट देकर (९ + ६ + २ =१७) साकरचंद ने सत्रह ऊँटों को सफलतापूर्वक बाँट दिया।

अब, मैं अपना अठारवाँ ऊँट वापस ले लेता हूँ।

मुनीम जी, आपको इतना जोरदार हल कैसे मिला? हम तो पूरी तरह से उलझ गए थे।

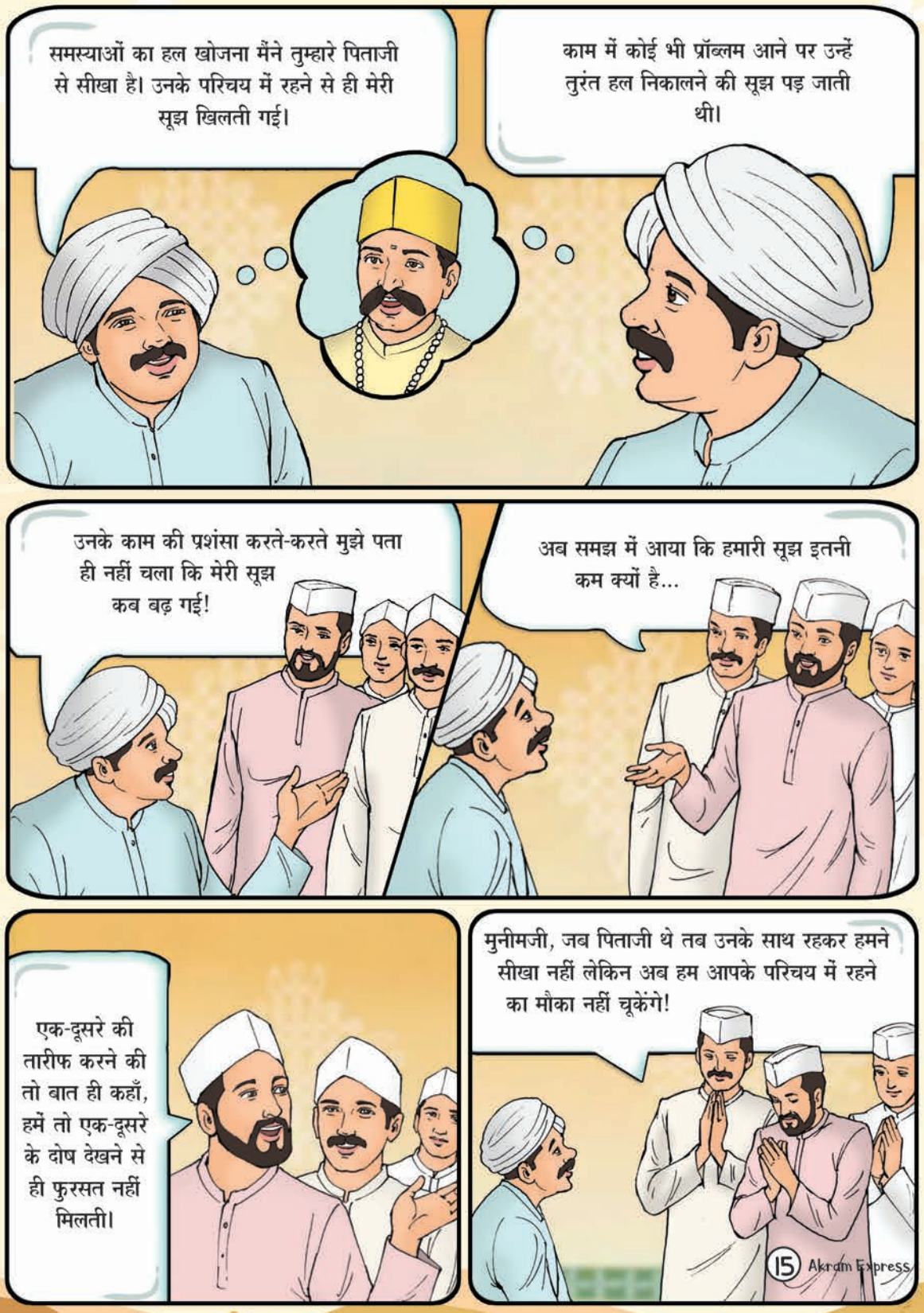

समस्याओं का हल खोजना मैंने तुम्हारे पिताजी से सीखा है। उनके परिचय में रहने से ही मेरी सूझ खिलती गई।
काम में कोई भी प्रॉब्लम आने पर उन्हें तुरंत हल निकालने की सूझ पड़ जाती थी।
उनके काम की प्रशंसा करते-करते मुझे पता ही नहीं चला कि मेरी सूझ कब बढ़ गई!
अब समझ में आया कि हमारी सूझ इतनी कम क्यों है...
एक-दूसरे की तारीफ करने की तो बात ही कहाँ, हमें तो एक-दूसरे के दोष देखने से ही फुरसत नहीं मिलती।
मुनीमजी, जब पिताजी थे तब उनके साथ रहकर हमने सीखा नहीं लेकिन अब हम आपके परिचय में रहने का मौका नहीं चूकेंगे!

खुद का

रीना और क्रिना ट्विन सिस्टर्स हैं। क्रीना को सूझ पड़ती है तो कभी रीना को... नीचे दिए गए वाक्यों में ढूँढ़ो कि किस समझ से किसकी सूझ खिलती है और उस वाक्य पर टीक करें।

परीक्षण करें

मैं दूसरों को देखकर सीखती हूँ।
मैं सबसे बेस्ट हूँ।

किसी की गलती होने पर मैं सुधारने का रास्ता ढूँढ़ती हूँ।
किसी की गलती होने पर मैं उसे तुरंत बता देती हूँ।

मीठी यादें

यह घटना उन दिनों की है जब यात्रा के लिए साउथ इन्डिया गए थे। नीरू माँ और पूज्यश्री के साथ महात्मा गरबा का आनंद ले रहे थे। तभी नीरू माँ को समाचार मिले कि जिस गाड़ी से किचन का सामान आ रहा था वह गाड़ी पंचर हो गई है।

किचन के सामान के बिना इतने सारे महात्माओं के लिए खाना कैसे बनाया जाए? महात्माओं को टाइम से खाना खिलाना भी जरूरी था। लेकिन नीरू माँ को कभी भी किसी समस्या से उलझन पैदा नहीं होती थी। उन्हें तुरंत सॉल्यूशन लाने की सूझ पड़ जाती थी।

नीरू माँ ने तीन महात्मा बहनों को साइड में बुलाकर परिस्थिति के बारे में बताया और किसी होटल में खाना बनाने के लिए जगह ढूँढ़ने के लिए कहा। नीरू माँ ने बहनों को होटल के बरतनों का उपयोग करके होटल वाले को उसका किराया देने का सुझाव दिया।

नीरू माँ ने फटाफट खिचड़ी, कढ़ी और सब्जी का मेनू सेट कर दिया और भाइयों को बाजार जाकर चावल, दाल, आलु, दही, बेसन और मसाला लाने को कहा।

नीरू माँ की अनोखी सूझ और गाइडन्स से भाइयों तथा बहनों ने साथ मिलकर डेढ़ घंटे में झटपट खाना बना दिया और महात्माओं को भरपेट खाना खिलाया!

एक बार बादशाह अकबर अपने दरबार में बैठे थे। तभी एक दरबारी काँच के बर्तन में कुछ लेकर आया।

बादशाह ने पूछा, "यह क्या है?"

दरबारी ने कहा, "इसमें रेत और चीनी का मिश्रण है।"

बादशाह ने पूछा, "किसलिए?"

"हम बीरबल की चतुराई की परीक्षा करना चाहते हैं। बहुत चर्चा सुनी है कि बीरबल किसी भी समस्या का हल ला सकता है। यदि वह इतना चतुर है तो फिर इस मिश्रण में कुछ मिलाए बिना रेत और चीनी को अलग कर के दिखाए।"

दरबारी ने चैलेन्ज दिया।

बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा, "देख लो बीरबल, हर दिन तुम्हें एक नई समस्या दे देते हैं। क्या तुम्हारे पास इस समस्या का कोई हल है?"

"इसका हल तो बहुत आसान है।" कहकर बीरबल काँच का बर्तन लेकर दरबार के बाहर चला गया।

बीरबल ने चीनी और रेत का मिश्रण एक पेड़ के चारों ओर फैलाकर डाल दिया।

"यह क्या कर रहे हो बीरबल?" दरबारी ने पूछा।

"यह आपको कल पता चल जाएगा।" बीरबल ने विश्वासपूर्वक कहा।

दूसरे दिन सभी दरबारी बादशाह अकबर के साथ उस पेड़ के पास जमा हुए। वहाँ सिर्फ रेत पड़ी थी। चींटियाँ चीनी के दाने लेकर अपने बिल में घुस गई थीं।

"अरे, चीनी कहाँ गई?" दरबारी ने पूछा।

"रेत से अलग हो गई!" बीरबल ने कहा।

और सभी हँस पड़े।

Akram Express

December 2022
Year : 10, Issue :9
Conti. Issue No.: 117

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

Admissions in Gnan Mandir (Gurukul)

for 5th to 8th standard, English and Gujarati medium

Jai Sat Chit Anand.

All parents who wish to inculcate the values and principles of Param Pujya Dada Bhagwan in their son, are invited to register, by 31st Dec 2022, for admission to: Gnan Mandir, Adalaj, for Academic year 2023- 2024. Registration is open only for boys of 5th to 8th standard, English and Gujarati medium.

For more information, please contact the administration office:

Mobile: 9924344481

Time: 10am to 12.30pm
3pm to 6.30pm

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025